

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लत्तुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु  
॥ श्रीमन्नारायणीये दशमं दशकम् ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারাযণীয়ে দশমং দশকম্ ॥

### সৃষ্টিভেদবর্ণনম্

রৈকুণ্ঠ বর্ধিতবলোহথ ভরংপ্রসাদা -  
দম্ভোজযোনিসৃজৎ কিল জীরদেহান্।  
স্বাস্থুনি ভুরুহমযানি তথা তিরশ্চাং  
জাতীর্মনুষ্যানিরহানপি দেবভেদান্ ॥ 10.1 ॥

মিথ্যাগ্রহাস্মিমতিরাগরিকোপভীতি -  
রজ্ঞানবৃত্তিমিতি পঞ্চরিধাং স সৃষ্টরা।  
উদামতামসপদার্থরিধানদূন -  
স্তেনে ংরদীযচরণস্মরণং রিশুদ্বৈত্ব্যে ॥ 10.2 ॥

তারং সসর্জ মনসা সনকং সনন্দং  
ভূযস্সনাতনমুনিং চ সনৎকুমারম্।  
তে সৃষ্টিকর্মণি তু তেন নিযুজ্যমানাঃ  
ংরংপাদভক্তিরসিকা জগৃহ্ন রাণীম্ ॥ 10.3 ॥

তারং প্রকোপমুদিতং প্রতিরুন্ধতোহস্য  
ক্রমধ্যতোহজনি মৃডো ভরদেকদেশঃ।  
নামানি মে কুরু পদানি চ হা রিরিঞ্চে -  
ত্যাদৌ রুরোদ কিল তেন স রুদ্রনামা ॥ 10.4 ॥

একাদশাহ্রযতযা চ রিভিন্নরূপং  
রুদ্রং রিধায দযিতা রনিতাশ্চ দংরা।

तारुण्यदत्तं च पदानि भरुप्रणुः  
प्राह प्रजारिरचनाय च सादरं तम् ॥ 10.5 ॥

रुद्राभिसृष्टभयदाकृतिरुद्रसङ्घ -  
सम्पूर्यमाणभुरनत्रयतीतचेताः ।  
मा मा प्रजाः सृज तपश्चर मङ्गलाये -  
त्याचष्ट तं कमलदूर्भदीरितात्मा ॥ 10.6 ॥

तस्याथ सर्गरसिकस्य मरीचिरत्रि -  
स्तत्राग्निराः क्रतुमुनिः पुलहः पुलस्त्यः ।  
अङ्गादजायत भृगुश्च रसिष्ठदम्भौ  
श्रीनारदश्च भगरान् भरदङ्घ्रिदासः ॥ 10.7 ॥

धर्मादिकानभिसृजन्नथ कर्दमं च  
राणीं रिधाय रिधिरङ्गजसङ्कुलोहदुः ।  
रुद्रोधि तैस्सनकदम्भमुखैस्तनूजै -  
रुद्रोधितश्च रिरराम तमो रिमुष्णन् ॥ 10.8 ॥

रेदान् पुराणनिरहानपि सररिद्याः  
कुरन् निजाननगणात्तुराननोहसौ ।  
पुत्रेषु तेषु रिनिधाय स सर्गरुद्धि -  
मप्राप्नुरंस्तुर पदाम्बुजमाप्रितोहदुः ॥ 10.9 ॥

जाननुपायमथ देहमजो रिभज्य  
स्त्रीपुंसभारमभजन्नुतद्वधुभ्याम् ।  
ताभ्यां च मानुषकुलानि रिरर्धयंस्तुं  
गोरिन्द मारुतपुरेश निरुक्चि रोगान् ॥ 10.10 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये दशमं दशकं समाप्तम् ॥